12.19 hrs.

MATTERS UNDER RULE 377

(i) NEED TO RE-START IMPORTANT PUBLIC WORKS IN BACKWARD FOREST AREAS OF UTTAR PRADESH

श्री राम प्यारे पनिका (राबर्ट्सगंज) : उत्तर प्रदेश में इस समय इण्डियन फोरेस्ट एक्ट में पिछले अर्ध संशोधन के कारण जिन भूमियों पर सिचाई जैसे भिन्न महत्वपूर्ण निर्माण कार्य हो रहे थे बन्द हो गये हैं। फलस्वरूप पिछड़े क्षेत्रों में प्रदेश सरकार द्वारा सिंचन सुविधाओं की वृद्धि करने पर रोक लग गई है। केवल ये ही नहीं, बल्कि जो श्रमिक निर्माण कार्यों में लगे हुए थे वे भी बेरोजगार हो गये हैं और उनके सामने रोजी-रोटी की समस्या खड़ी हो गयी है। जहां तक मुझे जानकरी हुई है, प्रदेश सरकार ने इस समस्या के सम्बन्ध में कृषि मन्त्रालय को पत्र लिखे हैं, परन्तु अभी तक समुचित कार्यवाही न होने से समस्या ज्यों की त्यों पड़ी है और उत्तर प्रदेश के पिछड़े क्षेत्र खास कर वन क्षेत्र वाले गांव में यह आशंका उत्पन्न हो गई है कि भविष्य में जनहित कार्यों की योजनाओं पर भी जो बन क्षेत्र में होंगी, कार्य नहीं हो सकेगा। केवल सिचाई के ही कार्यक्रम नहीं बल्कि अन्य कार्यक्रम भी जो वनभूमि में पड़ते हैं, उसमें अवरोध उत्पन्न हो गया है। वन क्षेत्रों में वर्षों से आदिवासी जातियां बसी हुई हैं तथा कृषि कार्य कर रही हैं उनके द्वारा कब्जा किये हुए भूमियों को नियमित करने में भी प्रदेश सरकार को कठिनाई का सामना करना पड़ेगा क्योंकि प्रदेश सरकार ने संशोधन के पूर्व ही कई आदेश प्रसारित कर दिये हैं।

अतः उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मेरा अनुरोध है कि शीघ्रातिशीघ्र इस सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार द्वारा निर्णय लिया जाय जिससे समस्या का निराकरण हो सके।

(ii) INADEQUATE HEALTH FACILITIES IN HILLY AREAS OF UTTAR PRADESH

श्री हरीश रावत (अल्मोड़ा) : अध्यक्ष महोदय, देश में अन्यत्र आर्थिक, सामाजिक और स्वास्थ्य के मामलों में बहुमुखी प्रगति होने के बावजूद उत्तर प्रदेश से पर्वतीय जनपद अभी तक पिछड़े हुए हैं। इस संदर्भ में सरकार का ध्यान विशेष रूप से इन क्षेत्रों में असंतोषजनक चिकित्सा सुविधाओं की ओर दिलाया जाता है। स्थिति यहां तक चिंताजनक है कि परिवार कल्याण हेतु केन्द्र द्वारा प्रायोजित नई योजना का इन क्षेत्रों में मूलभूत चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने में भी वस्तुतः कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। लगभग 85 प्रतिशत चिकित्सालयों में चिकित्सकों की नियुक्ति नहीं की गई है। अधिकांश चिकित्सालयों में फार्मेसिस्टों द्वारा चिकित्सक का कार्य किया जाता है और दूरस्थ क्षेत्रों के चिकित्सालयों में वार्ड बाय, धाय या स्वीपर कम चौकीदार द्वारा दवा वितरण का कार्य किया जाता है।

चिकित्सालयों की संख्या भी अपर्याप्त है। लोगों को 15 किलोमीटर से अधिक पैदल चलकर चिकित्सा हेतु आना पड़ता है। महिला चिकित्सालयों की बहुत ही कम संख्या होने के कारण महिलाओं और बच्चों को अत्याधिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। चिकित्सालयों के या तो भवन नहीं हैं या आवश्यक साज सज्जा का अभाव है। एक्स-रे मशीनें भी इस क्षेत्र में नाम दुर्लभ हैं। दवाइयां नाम मात्र को ही हैं।

यही कारण है कि इस क्षेत्र में बाल मृत्यु व महिला मृत्यु की दर अत्याधिक है। क्षय रोग यहां आम बात है। कुष्ठ रोग से पीड़ित व्यक्तियों के लिए यहां कोई राजकीय चिकित्सालय नहीं है। स्थिति की गंभीरता

को देखते हुए मेरा माननीय स्वास्थ्य मंत्री से निवेदन है कि वह समुचित कार्य हेतु निम्नलिखित बिंदुओं पर योजना आयोग व राज्य सरकार से वार्ता करें :

1. पर्वतीय क्षेत्रों में चिकित्सालयों तथा लोक स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना हेतु वर्तमान मानकों को और अधिक उदार बनाना।

2. दवाओं व साज सज्जा हेतु और अधिक अनुदान की राशि निर्धारित करना।

3. उत्तरप्रदेश के मेडिकल कालिजों में पर्वतीय क्षेत्रों के लिए निर्धारित कोटे पर प्रशिक्षण प्राप्त डाक्टरों हेतु पर्वतीय क्षेत्रों में ही सेवा करना अनिवार्य करना।

4. प्रदेश के डाक्टरों की पदोन्नति की शर्त में पर्वतीय क्षेत्रों में कम से कम तीन वर्ष सेवा करना अनिवार्य बनाना।

5. पर्वतीय क्षेत्रों में एक मेडिकल कालिज की स्थापना करना।

6. पर्वतीय क्षेत्रों में चिकित्सकों की कमी को दूर करने हेतु तत्काल तदर्थ नियुक्तियां करना।

7. पर्वतीय क्षेत्रों में काम करने वाले डाक्टरों को प्रोत्साहन देना।

8. पर्वतीय क्षेत्रों में बेरीनाग और ग्वालदम नामक स्थानों पर दो और क्षय रोगाश्रम स्थापित करना और

9. एक स्थान पर कुष्ठरोगाश्रम स्थापित करना।

इन उल्लिखित समस्याओं का समाधान करवाने की कृपा करें।

(iii) NEED FOR A DAILY BOEING SERVICE FROM MADRAS TO MADURAI

SHRI CUMBUM N. NATARAJAN (Periyakulam): Madurai in Tamil Nadu is not only the second biggest city in the State but also the oldest city in the history of India. The Sangam literature, which is as old as the country, refers to the prominence of Madurai even in those ancient days.

Madurai is the seat of Pandian culture, one of the three famous kingdoms of Tamil Nadu. The temples in Madurai have attracted the attention of archaeologists and architects all over the world, besides invoking the religious fervour of the people from all over the country.

Madurai is also the centre of industry and trade for the southern parts of Tamil Nadu. The plantation crops like cardamom, coffee, etc. are foreign exchange earners and they have to be transported through Madurai only. Of late, the flowers of Madurai district are being exported to countries in Europe for manufacturing aromatics. Kodaikanal, which is as popular as Srinagar in the North, is the hill station near Madurai. It attracts tourists, both national and international.

Madurai airport is one of the oldest airports. Presently there are two Avro flights from Madras to Madurai. They are utilised more than hundred per cent. The waiting list is always very long for Madurai. Many times foreign tourists charter boeing flights to Madurai. In fact, the runway in Madurai was originally planned for the landing of Boeing. Somehow it remains neglected so far. There is pressing need for a daily Boeing service from Madras to Madurai and back on the same day.